मेंढ़क राजकुमार



लेखन व चित्रः पॉल गैल्डन

(ग्रिम बंधुओं के पुर्नकथन पर आधारित)

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

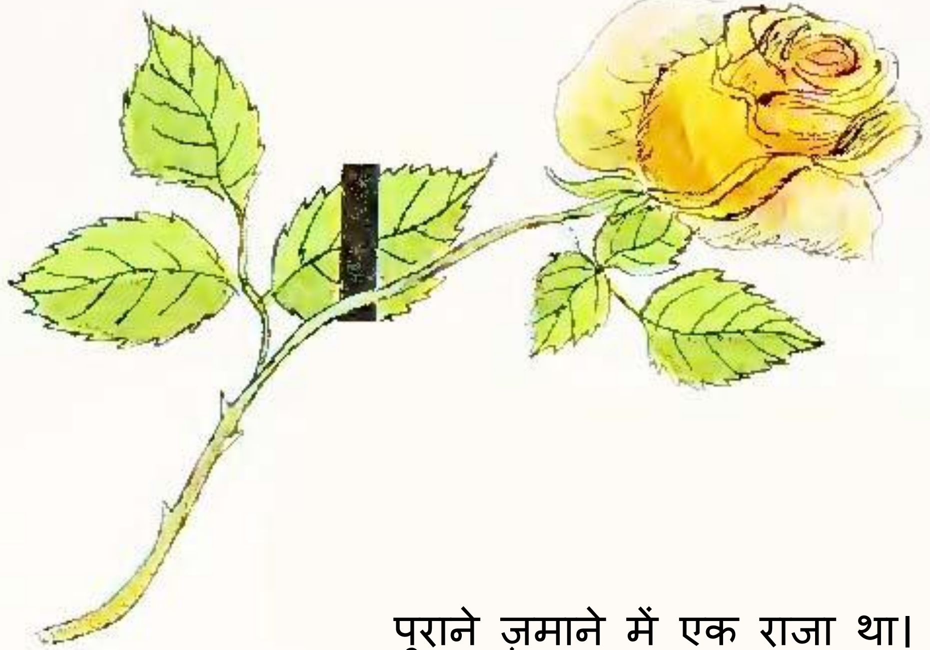


मेंढ़क राजकुमार

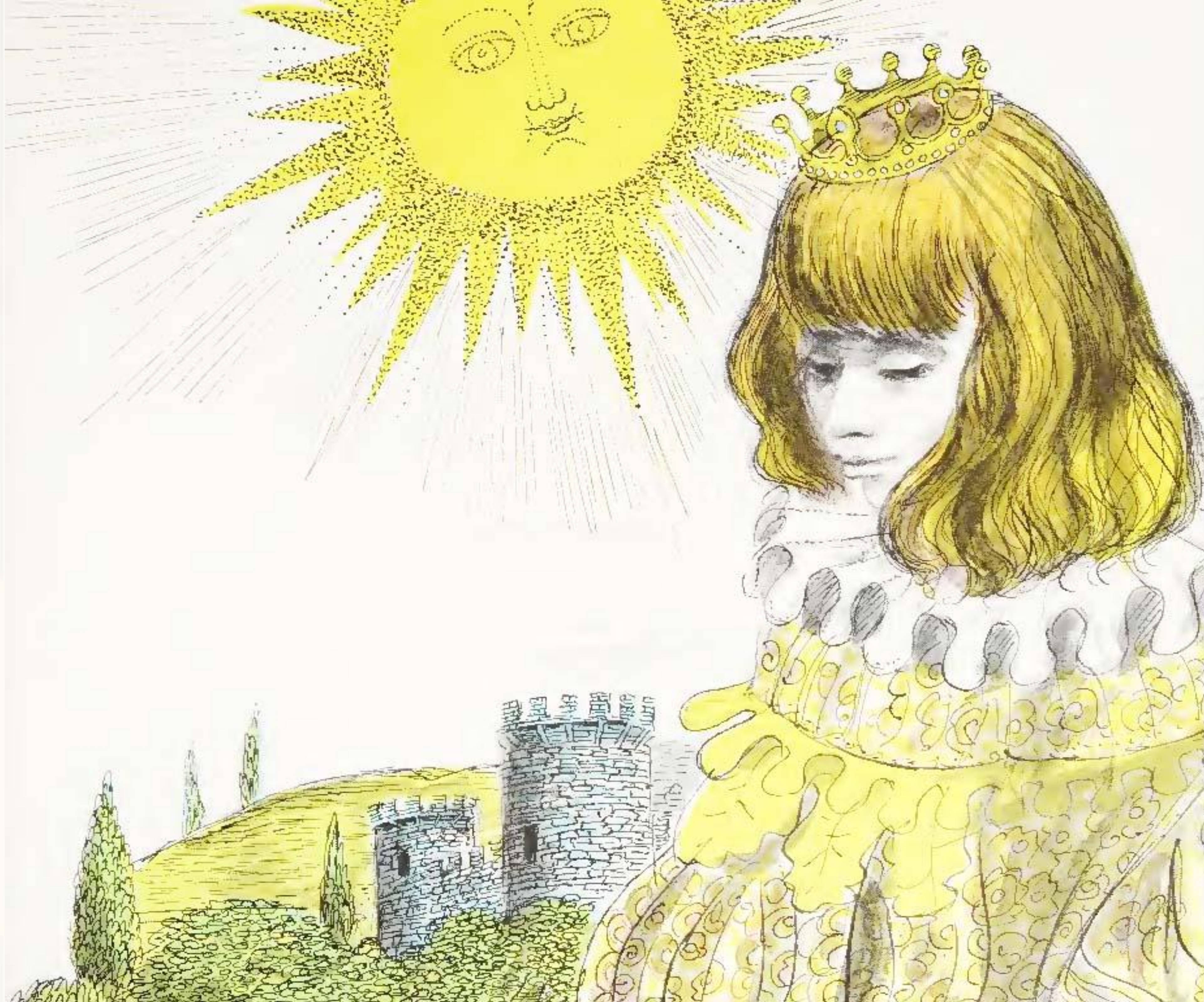
लेखन व चित्रः पॉल गैल्डन
(ग्रिम बंधुओं के पुर्नकथन पर आधारित)
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

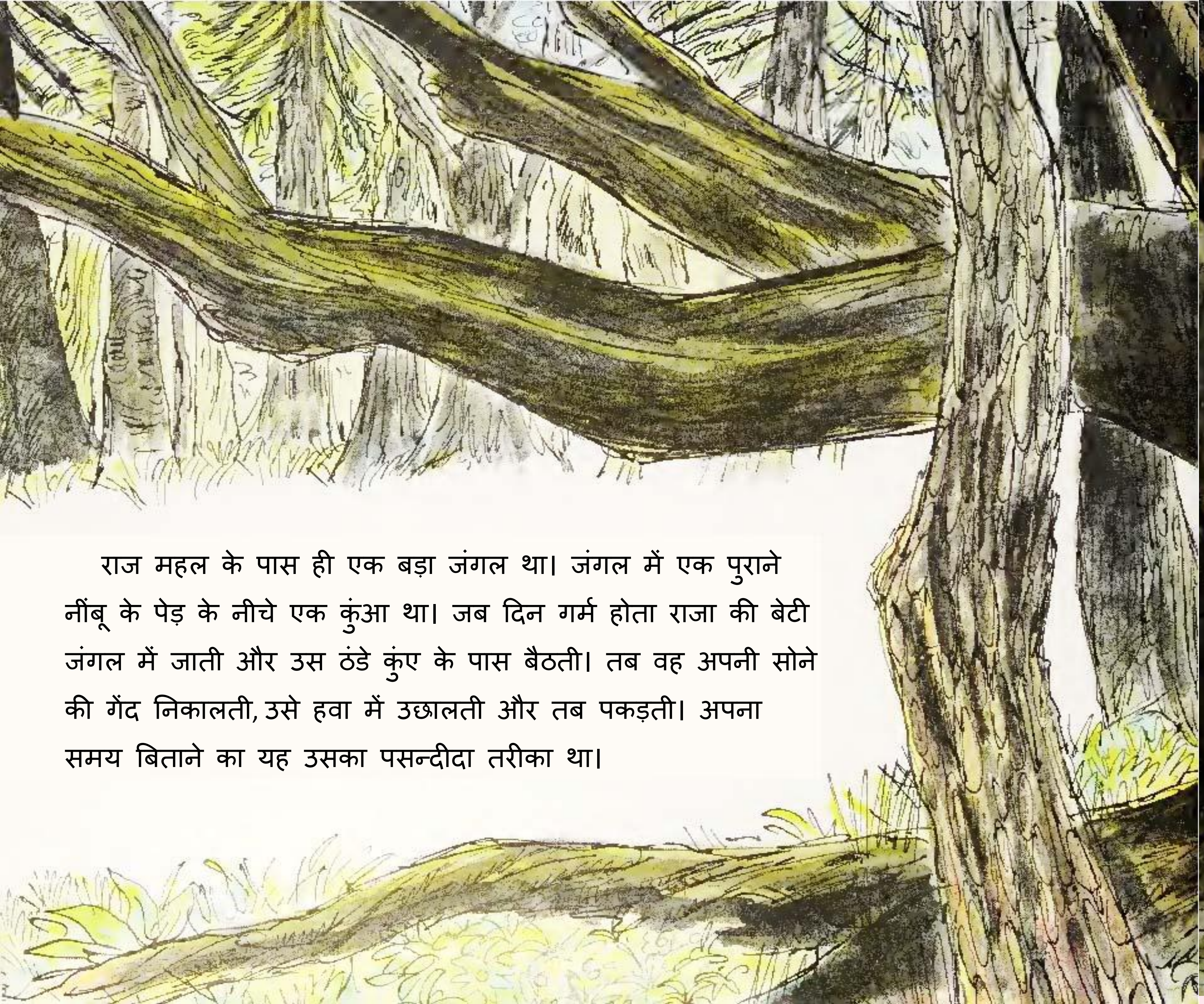
एलेनॉर के लिए





पुराने ज़माने में एक राजा था। उसकी सबसे छोटी बेटी इतनी सुन्दर थी कि सूरज तक, जिसने बहुत कुछ देख रखा था, हर बार उसे देख ठिठकता और ठीक उस पर चमकता।





राज महल के पास ही एक बड़ा जंगल था। जंगल में एक पुराने नींबू के पेड़ के नीचे एक कुंआ था। जब दिन गर्म होता राजा की बेटी जंगल में जाती और उस ठंडे कुंए के पास बैठती। तब वह अपनी सोने की गेंद निकालती, उसे हवा में उछालती और तब पकड़ती। अपना समय बिताने का यह उसका पसन्दीदा तरीका था।

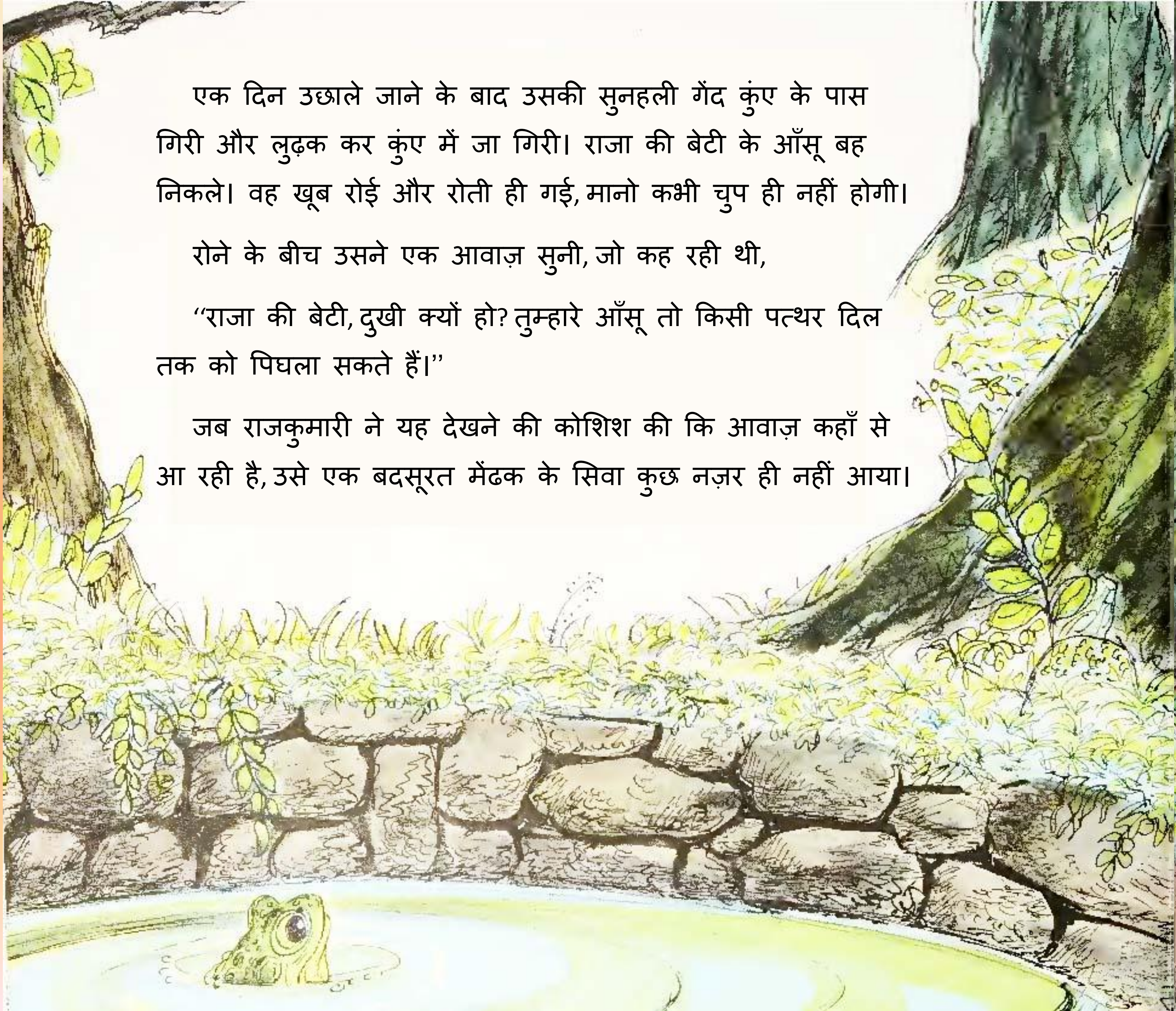


एक दिन उछाले जाने के बाद उसकी सुनहली गेंद कुंए के पास गिरी और लुढ़क कर कुंए में जा गिरी। राजा की बेटी के आँसू बह निकले। वह खूब रोई और रोती ही गई, मानो कभी चुप ही नहीं होगी।

रोने के बीच उसने एक आवाज़ सुनी, जो कह रही थी,

"राजा की बेटी, दुखी क्यों हो? तुम्हारे आँसू तो किसी पत्थर दिल तक को पिघला सकते हैं।"

जब राजकुमारी ने यह देखने की कोशिश की कि आवाज़ कहाँ से आ रही है, उसे एक बदसूरत मेंढक के सिवा कुछ नज़र ही नहीं आया।



"अरे! क्या तुम बोल रहे हो, बूढ़े फुदकू?" उसने पूछा। "मैं रो इसलिए रही हूँ कि मेरी सुनहली गेंद कुंए में जा गिरी है।"

"कोई बात नहीं, तुम मत रोओ," मेंढक ने दिलासा देते कहा, "मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ। पर अगर मैं गेंद वापस ला दूँ, तो तुम मुझे क्या दोगी?"



"जो तुम चाहो, प्यारे मेंढक," राजकुमारी ने कहा। "मेरा कोई भी कपड़ा, मेरे बेशकीमती मोती, मेरा साने का ताज!"

"तुम्हारे कपड़े, तुम्हारे मोती या सोने का ताज, मुझे नहीं चाहिए," मेंढक ने कहा। "पर अगर तुम मझे प्यार करो, अपना साथी बना लो, अपने थाल से मुझे खाने दो, अपने प्याले से पीने दो और अपने बिस्तर पर साथ सोने दो - तो मैं गोता लगा तुम्हारी गेंद वापस ला सकता हूँ।"

"ओह हाँ," राजकुमारी ने कहा, "मैं यह सब करने का वादा करती हूँ। तुम बस मेरी गेंद वापस ला दो।"

पर मन में राजकुमारी ने सोचा, "क्या बकवास कर रहा है। मानो वह पानी में बैठ टर्राने के सिवा कुछ और कर भी सकता है। किसी इन्सान का साथी भला वह कैसे बन सकता है?"

पर जैसे ही मेंढक ने उसे वाद करते सुना, उसने पानी में डुबकी लगाई। और कुछ देर बाद जब वह सतह पर लौटा, गेंद उसके मुँह में थी। उसने गेंद घास पर उछाल दी।



राजकुमारी अपनी सुनहली गेंद पा बेहद खुश हो गई। उसने गेंद उठाई और उसे ले भाग गई।

“रुको, रुको!” मेंढक चीखा। “मुझे भी उठा लो, मैं तुम्हारी तरह तेज़ नहीं दौड़ सकता!”

पर इसका कोई फायदा नहीं हुआ। राजकुमारी ने मेंढक को सुना ही नहीं। वह तो महल की ओर दौड़ती रही, बेचारे मेंढक को भूल ही गई।



अगले दिन जब राजा की बेटी, राजा और दरबारियों के साथ बैठी अपने सोने के थाल में खाना खा रही थी, संगमरमर की सीढ़ियों पर पटर-पटर चढ़ने और कूदने-उछलने की आवाज़ें सुनाई दीं।

तब किसीने दरवाज़ा खटखटाया। एक आवाज़ ने ज़ोर से कहा, "राज की सबसे छोटी बेटी, मुझे अन्दर आने दो!"







राजकुमारी ने दरवाज़ा खोलने पर पाया कि मेंढक बाहर बैठा है। उसने फट्ट से दरवाज़ा बन्द किया और घबराई-सी अपनी कुर्सी पर वापस जा बैठी।

राजा ने ग़ौर किया कि उसकी बेटी का दिल तेज़ी से धड़क रहा है, सो उसने पूछा, "बिटिया किससे डर रही हो? क्या बाहर कोई दानव तुम्हें उठा ले जाने को खड़ा है?"

"नहीं," राजकुमारी बोली, "कोई दानव नहीं है, पर बाहर एक ख़ौफनाक, बदसूरत मेंढक है।"

"और वह मेंढक आख़िर क्या चाहता है?"





"ओह पिताजी," वह बोली। "कल जब मैं अपनी सुनहली गेंद से खेल रही थी, वह कुंए में जा गिरी। जब मैं राने लगी वह मेंढक आया। तब मैंने उसे अपना साथी बनाने का वादा किया, तो वह गेंद को निकाल लाया। मैंने वादा तो यह सोच कर किया था कि वह गेंद को पानी से निकाल ही नहीं सकेगा। अब वह दरवाज़े के बाहर खड़ा है और अन्दर आने की ज़िद कर रहा है!"

सभी लोगों ने तब मेढक को दूसरी बार दस्तक देते और ज़ोर से यह कहते सुनाः

“राजा की सबसे छोटी बेटी

खेलो मेरे लिए दरवाज़ा!

पास कुंए के किया था वादा,

खोलो तुम अब दरवाज़ा!”

“जो वादा तुमने किया था, उसे तो तुम्हें पूरा करना ही चाहिए,” राजा ने अपनी बेटी से कहा। “अब जाओ और उसे अन्दर आने दो।”

राजकुमारी ने दरवाज़ा खोला ही था कि मेंढकता कूद कर अन्दर आ गया।



उसने राजकुमारी से ज़ोर से कहा, "मुझे उठाओ और अपने पास बिठाओ।"

राजकुमारी ने तब तक अनसुनी की, जब तक उसके पिता ने उसे ऐसा करने का हुकुम न दिया।

जब मेंढक कर्सी पर आ बैठा, उसने एक छलांग लगाई और मेज़ पर आ बैठा। तब बोला "अपनी साने का थाल मेरे पास करो ताकि हम साथ खा सकें।"

राजकुमारी ने उसका कहा किया। पर सबको नज़र आ रहा था कि उसने यह कितने बेमन से किया था। पर मेंढक ने यह अनदेखा कर भर पेट खाया। इधर राजकुमारी कुछ निगल तक नहीं सकी।

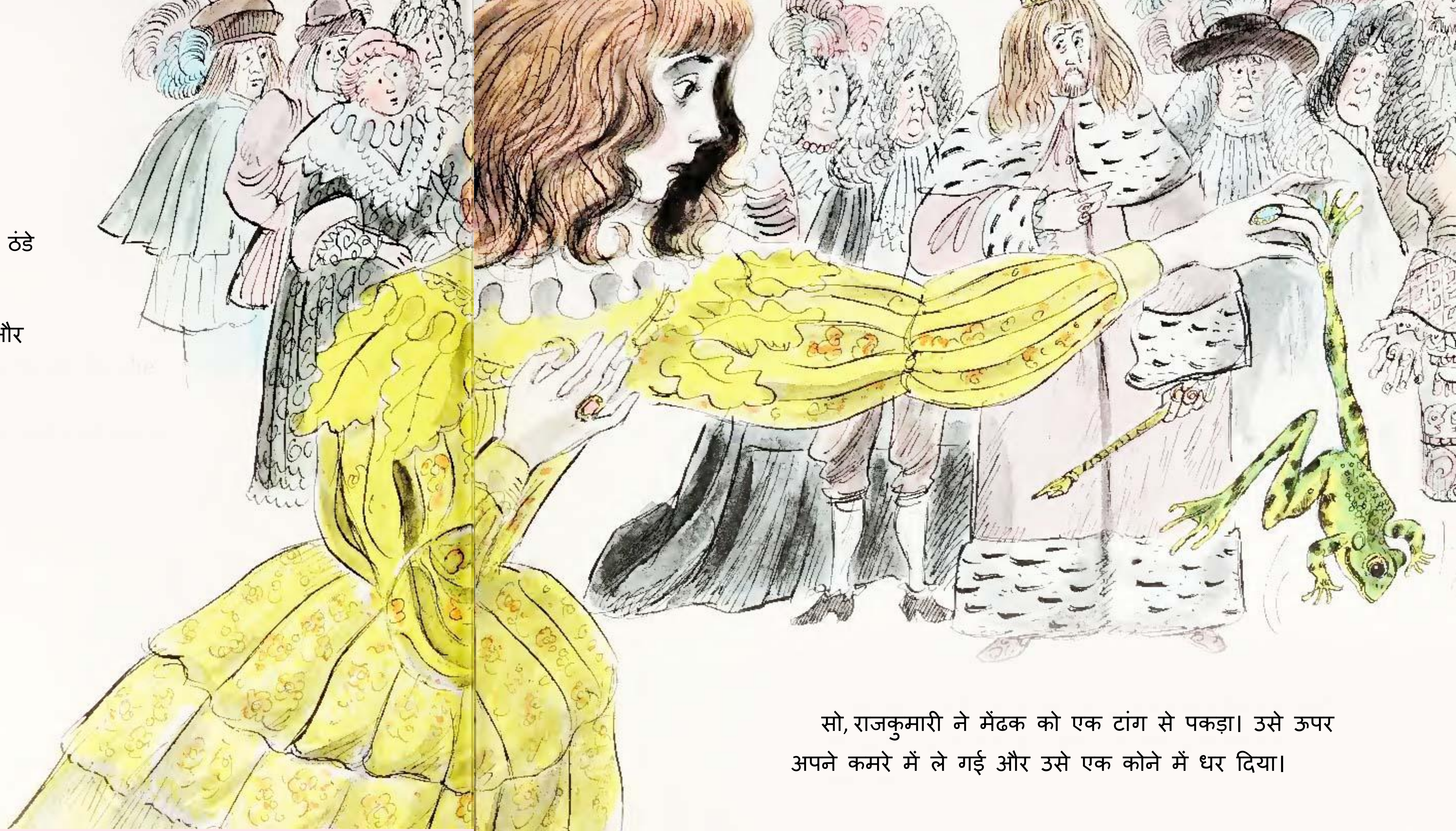
"अब मैं थक चुका हूँ," मेंढक ने खा चुकने के बाद कहा। "मुझे अपने कमरे में ले चलो। हम दानों साथ लेटेंगे और सोएंगे।"



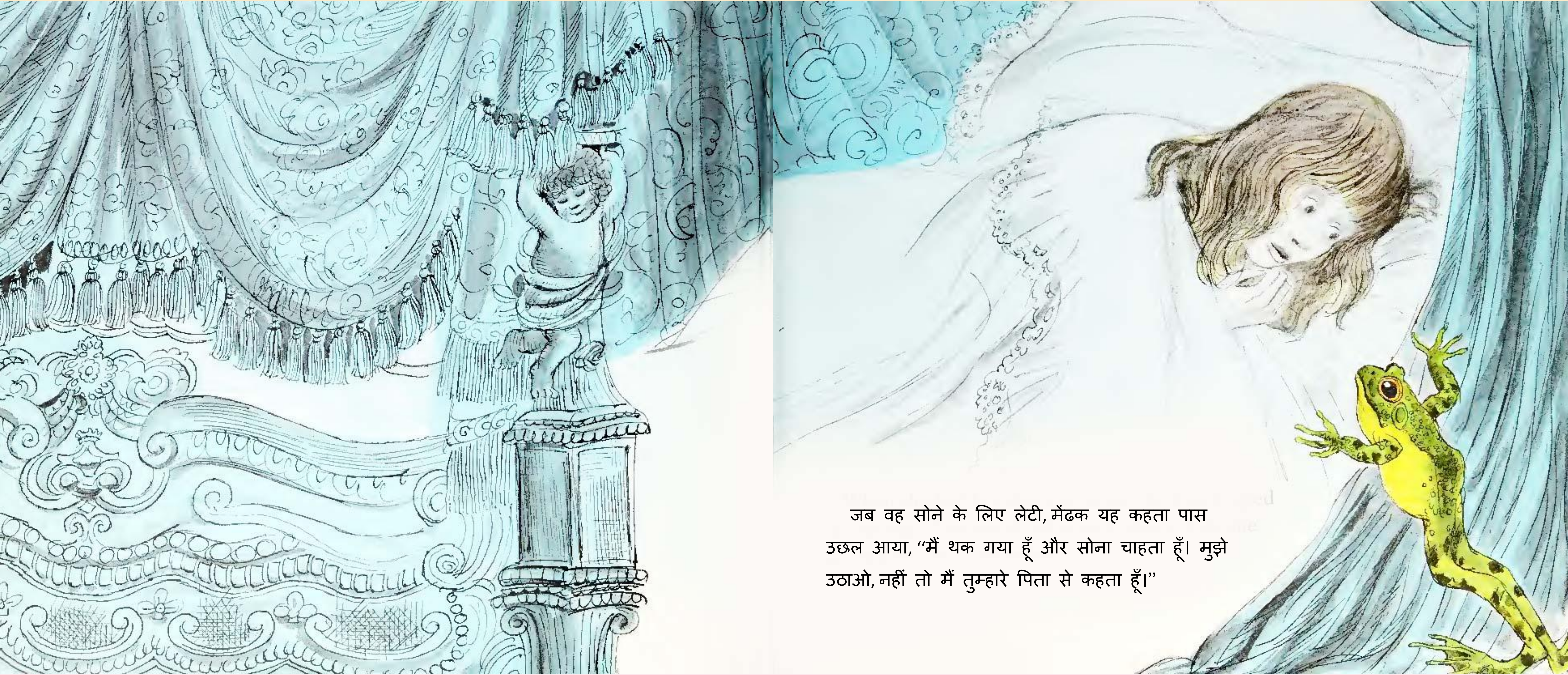
राजा की बेटी के आँसू बह निकले। उसे ठंडे और गिलगिले मेंढक से डर लगा रहा था।

राजा अपनी बेटी से फिर नाराज़ हुआ और उससे कहा,

"अपना किया वादा निभाओ!"



सो, राजकुमारी ने मेंढक को एक टांग से पकड़ा। उसे ऊपर अपने कमरे में ले गई और उसे एक कोने में धर दिया।



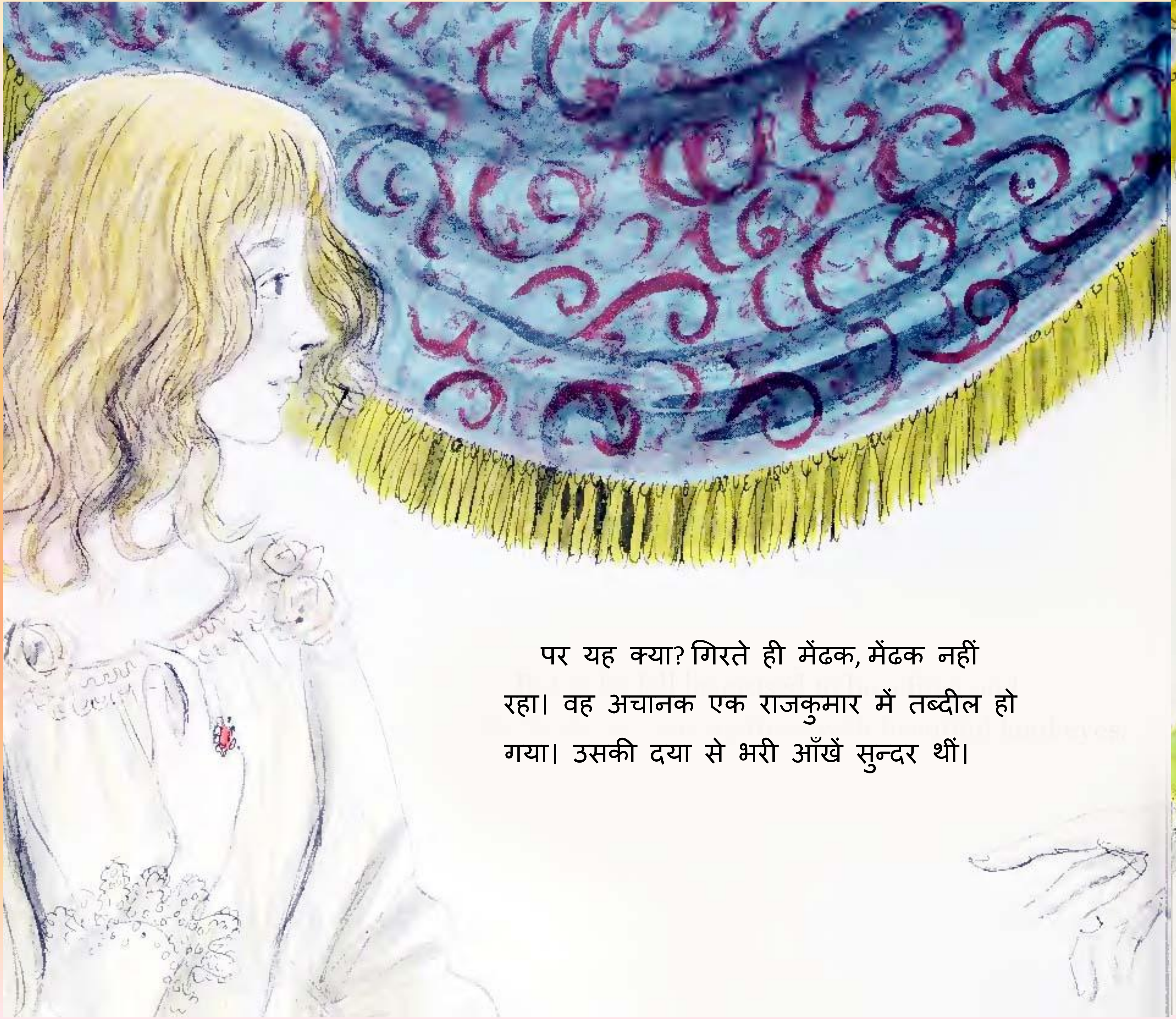
जब वह सोने के लिए लेटी, मेंढक यह कहता पास उछल आया, ‘‘मैं थक गया हूँ और सोना चाहता हूँ। मुझे उठाओ, नहीं तो मैं तुम्हारे पिता से कहता हूँ।’’



राजकुमारी के मन में अब इतना गुस्सा जागा कि उसने मेंढक को उठा कर, अपनी पूरी ताकत से, यह कहते दीवर की ओर फेंका,

"अब चुप भी करो, बदसूरत मेंढक!"





पर यह क्या? गिरते ही मेंढक, मेंढक नहीं रहा। वह अचानक एक राजकुमार में तब्दील हो गया। उसकी दया से भरी आँखें सुन्दर थीं।





राजकुमार ने राजा की बेटी को बताया कि एक दुष्ट चुडैल ने उसे जादू से तब तक के लिए बांध दिया था, जब तक किसी राजा की बेटी उसे आज़ाद न कर दे। यह भी कि वे शादी करेंगे और साथ-साथ राजकुमार के पिता के देश में लौटेंगे।



सो दोनों की शादी हुई और वे सोने के बग्घी में बैठ निकल पड़े। बग्घी को आठ सफेद घोड़े खींच रहे थे जिनके सर गुलाबी पंखों से सजे थे। बग्घी के पीछे राजकुमार का वफ़ादार सेवक हैनरी खड़ा था।

जब राजकुमार मेंढक में तब्दील हुआ तो हैनरी को इतना दुख हुआ कि उसे अपने दिल को टूटने से बचाने के लिए लोहे के तीन पट्टे पहनने पड़े। पर अब वह अपने मालिक को खुश देख खुश था।

जब वे राजकुमार के महल के पास पहुँचे, कुछ तड़कने की ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी। राजकुमार ने सोचा कि वह शायद बग्घी के पहिये के टूटने की आवाज़ है। पर यह तो हैनरी के दिल के गिर्द बंधे पट्टों के टूटने की आवाज़ थी, क्योंकि वह राजकुमार की आज़ादी से बेहद खुश था।

